ROHTAS MAHILA College SASARAM
Department OF- History - Subsidiary
6-05-2020 - B.A. I [2019-20]
Dr. Satyajeet Sareng [NOTES]

[बौद्ध धर्म]

गौतम बुद्ध - एक परिचय :—

बौद्ध धर्म के प्रवर्तक महात्मा बुद्ध का जन्म नेपाल की तराई में स्थित कपिलवस्तु लुम्बनी ग्राम में शाक्य क्षत्रिय कुल में 563 ई० पू० में हुआ था। इनकी माता का नाम महामाया तथा पिता का नाम शुद्धोधन था। जन्म के 7 सातवें दिन माता का देहान्त हो जाने से सिद्धार्थ का पालन पोषण उनकी मौसी प्रजापति गौतमी ने किया।

16 वर्ष की अवस्था में सिद्धार्थ का विवाह शाक्य कुल की कन्या यशोधरा से हुआ जिनका बौद्ध ग्रंथों में अन्य नाम बिम्बा, गोपा, भद्दकच्चना, मिलता है। सिद्धार्थ से यशोधरा को एक पुत्र उत्पन्न हुआ जिसका नाम राहुलभद्रा सांसारिक समस्याओं से व्यथित होकर सिद्धार्थ ने 29 वर्ष की अवस्था में गृह त्याग दिया। इस त्याग को बौद्ध धर्म में महाभिनिष्क्रमण कहा गया है। गृहत्याग के उपरान्त सिद्धार्थ अनोमा नदी के तट पर अपने

सिरे को मुड़वा कर भिक्षुओं का काषाय वस्त्र धारण किया। सात वर्ष तक वे ज्ञान की खोज में इधर-उधर भटकते रहे। सर्वप्रथम वैशाली के समीप अलार कलाम [सांख्य दर्शन आचार्य] नामक सन्यासी के आश्रम में आये। इसके उपरान्त वे उरुवेला [बोधगया] के लिए प्रस्थान किये जहाँ उन्हें कौडिन्य आदि पाँच साधक मिले।

छः वर्ष तक अथक परिश्रम एवं घोर तपस्या के बाद 35 वर्ष की आयु में वैशाख पूर्णिमा की एक रात पीपल [वट] वृक्ष के नीचे निरंजना [पुनपुन] नदी के तट पर सिद्धार्थ को ज्ञान प्राप्त हुआ। इसी दिन से वे तथागत हो गये। ज्ञान प्राप्ति के बाद गौतम बुद्ध के नाम से प्रसिद्ध हुए। उरुवेला से बुद्ध सारनाथ [ऋषि पत्तनम एवं मृगदाव] [illegible] पहुँचे उन्होंने पाँच ब्राह्मण संन्यासियों को अपना प्रथम उपदेश दिया, जिसे बौद्ध ग्रन्थों में धर्म-चक्र प्रवर्तन नाम से जाना जाता है। बौद्ध संघ में प्रवेश सर्वप्रथम यहीं से प्रारम्भ हुआ। महात्मा बुद्ध ने तपस्सु एवं कालिक नामक दो शूद्रों को बौद्ध धर्म का सर्वप्रथम अनुयायी बनाया,

★ बुद्ध ने अपने जीवन का सर्वाधिक उपदेश कोशल देश की राजधानी श्रावस्ती में दिये। उन्होंने मगध को अपना प्रचार केन्द्र बनाया। बुद्ध के प्रसिद्ध अनुयायी शासकों में बिम्बिसार, प्रसेनजित तथा उदयन बुद्ध के प्रधान शिष्य उपालि व आनन्द थे।

सारनाथ में ही बौद्धसंघ स्थापना हुई। महात्मा बुद्ध अपने जीवन के अंतिम पड़ाव में हिरण्यवती नदी तट पर स्थित कुशीनारा पहुंचे। जहां पर 483 ई० पू० में 80 वर्ष की अवस्था में इनकी मृत्यु हो गई। इसे बौद्ध परम्परा में महापरिनिर्वाण के नाम से जाना जाता है।

मृत्यु से पूर्व कुशीनारा के परिव्राजक सुभद्र को उन्होंने अपना अंतिम उपदेश दिया। महापरिनिर्वाण के बाद बुद्ध के अवशेषों को आठ भागों में विभाजित किया गया।

बौद्ध धर्म की शिक्षाएं एवं सिद्धान्त

★ बौद्ध धर्म के त्रिरत्न है — बुद्ध, धम्म तथा संघ।

★ बौद्ध धर्म के मूलाधार चार आर्य सत्य हैं। ये है — (1) दुःख (2) दुःख समुदाय (3) दुःख निरोध, (4) दुःख निरोधा गामिनी प्रतिपदा (दुःख निवारक मार्ग) अर्थात आष्टांगिक मार्ग

★ दुःख को हरने वाले तथा तृष्णा का नाश करने वाले आष्टांगिक मार्ग के आठ अंग हैं। जिन्हें मज्झिमप्रतिपदा अर्थात मध्यम मार्ग भी कहते हैं।

★ आष्टांगिक मार्ग के तीन मुख्यभाग हैं — [1] प्रज्ञा ज्ञान [2] शील तथा [3] समाधि।
इन तीन प्रमुख भागों के अन्तर्गत जिन आठ उपायों की प्रस्तावना की गयी है। वे निम्न है —
[1] सम्यक दृष्टि [2] सम्यक संकल्प
[3] सम्यक वाणी [4] सम्यक कर्मान्त
[5] सम्यक आजीव [6] सम्यक व्यायाम
[7] सम्यक स्मृति [8] सम्यक समाधि

★ आष्टांगिक मार्ग को भिक्षुओं का 'कल्याण मित्र' कहा गया।

★ बौद्ध धर्म के अनुसार मनुष्य के जीवन का परम लक्ष्य है — निर्वाण प्राप्ति।
निर्वाण का अर्थ है दीपक का बुझ जाना अर्थात जीवन मरण के चक्र से मुक्त हो जाना।
निर्वाण इसी जन्म से प्राप्त हो सकता है किन्तु महापरिनिर्वाण मृत्यु के बाद ही सम्भव है।

★ बुद्ध ने दस शीलों के अनुशीलन को नैतिक जीवन का आधार बनाया है।

★ जिस प्रकार दुःख समुदाय का कारण जन्म है उसी तरह जन्म का कारण अज्ञानता का चक्र है।